IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजनीतिक यात्रा के रूप में जनता दल (यूनाइटेड) का विकास : एनडीए पूर्व से एनडीए–विघटन के बाद तक

उज्ज्वल गुप्ता

शोध छात्र, राजनीतिक विज्ञान विभाग, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

डॉ. ओम प्रकाश गुप्ता

सहायक आचार्य, राजनीतिक विज्ञान विभाग, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

सारांश

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय पार्टी के रूप में जनता दल (यूनाइटेड) का उदय न सिर्फ एक राजनीतिक परिघटना है। बल्कि इससे इतर यह एक सामाजिक बदलाव का भी घोटक सिद्ध हुआ है। जनता दल यूनाइटेड को पिछले कुछ वर्षों में देखा जाए तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि इसने अपनी गठबंधन रणनीतियों में व्यापक परिवर्तन किए है। और यही कारण है। की एनडीए (राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन) से पहले के सहयोग से लेकर एनडीए के साथ में इसकी भूमिका और अंत में, एनडीए गठबंधन के बाद अलग होने के फैशले तक, पार्टी की यात्रा भारतीय राजनीतिक परिदृश्य की गतिशील प्रकृति को दर्शाती है। माना जाता है कि क्षेत्रीय दलों के उदय होने के पीछे प्रमुख कारण राष्ट्रीय दलों से जनता का असन्तुष्ट होना रहा है। तथा असंतुलित क्षेत्रीय विकास, प्रतिस्पर्धा और जातीयता से लेकर धर्म की भावना आदि ने इसमें आग में घी डालने का काम किया है।[i] मण्डल आयोग की जब सिफ़ारिसे लागू की गई तो इसने पिछड़े वर्ग में आने वाली तमाम जातियों में बड़ा ध्रुवीकरण किया और कई राजनीतिक दल सामने आए। जहां उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव तथा बिहार में लालू यादव, यादवों के बड़े नेता बनकर उभरे हैं। तो वहीं नीतीश कुमार कुर्मीयों के नेता बनकर उभरे इसमें कोई मतभेद नहीं है की उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी तथा बिहार में राष्ट्रीय जनता दल और जनता दल यू सफलतापूर्वक भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय पार्टी के रूप में अपना कीर्तिमान स्थापित कर चुकी है।[ii]

आज वर्तमान परिदृश्य में जब सम्पूर्ण भारत में एक राष्ट्र – एक चुनाव की चर्चा जब अपने चरम पर है। तो यह व्यापक हो जाता है कि कैसे क्षेत्रीय पार्टियों को इससे जोड़कर देखा जाए। इसी संदर्भ में भारत की महत्वपूर्ण क्षेत्रीय तथा बिहार की प्रमुख पार्टी जनता दल (यूनाइटेड) का राजनीतिक यात्रा का अवलोकन करना नितांत आवश्यक हो जाता है। क्योंकि यह वही पार्टी है जिसने बिहार में भारतीय जनता पार्टी के साथ एनडीए गठबंधन का पिछले पंद्रह वर्षों से सरकार की कमान संभाले हुए है। इतना ही नहीं इस गठबंधन की सरकार में कई बार उतार -चढ़ाव का दौर भी देखने को मिलता है।

बीज शब्द : क्षेत्रीय पार्टियां, राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन, जेडीयू, भाजपा, मण्डल कमीशन

गठबंधन युग से पूर्व- एनडीए

एकदलीय बहुमत के रूप में 1952 से 1989 तक एक लंबें शासनकाल में काँग्रेस की वर्चस्वता को वर्गीकृत किया जा सकता है, जिसने राजनीति तथा सत्ता में अपेक्षाकृत अत्यधिक स्थायित्व प्रदान किया है। ठीक इसी संदर्भ में वर्ष 1996 से वर्ष 1999 की राजनीतिक गतिविधि को ऐसे समय के रूप में वर्गीकृत करना अतिशयोक्ति नहीं होगा, जिसमे गठबंधन वाली राजनीति की भूमिका प्रभावशाली थी। परंतु यह काँग्रेस के एकदलीय शासनकाल के भांति स्थायित्व नहीं थी, बल्कि सरकार और राजनीति में अस्थायित्व तथा अविश्वास निरंतर व्याप्त था। यह सही था की 1967 में राज्य स्तर पर तथा 1977 एवं 1989 में राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन राजनीति के कुछ प्रयोग हुए थे। किंतु 1996 का ही वह वर्ष था जब राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक रूप में गठबंधन की राजनीति का प्रारंभ हुआ। वस्तुतः इसकी पृष्ठभूमि 1989 से ही बननी शुरू हो गई थी, जब इसी वर्ष होने वाले आम चुनाव में और इसके बाद होने वाले अन्य लोकसभा चुनाव में किसी भी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला था। वर्ष 1989 के आम चुनाव के जब परिणाम सामने आए तो कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी किंतु अभी भी वह बहुमत के आंकड़े से दूर ही थी। जनता दल, भाजपा और आम दलों के सहयोग से अंततः जनता दल सरकार बनाने में कामयाब रही। वर्ष 1991 की लोकसभा चुनाव के परिणाम के अनुसार एक बार फिर कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनी, किंतु इस बार वह एक अल्पमत वाली सरकार के गठन में कामयाब रही।[iii]

वैसे 1990 का दशक व्यापक परिवर्तनों एवम् विरोध के लिए जाना जाता है। जहां एक तरफ उदारीकरण, निजीकरण, तथा वैश्वीकरण के लिए पूरी दुनिया में भारत चर्चा का केंद्र बना हुआ था जो आर्थिक मंदी से निपटने के लिए अपने नीतियों में सुधार कर रहा था तो वहीं भारत के अंदर घलेरू जातिलताएं उभरकर सामने आने लगी थी। जहां पिछड़ा वर्ग की उत्थान के प्रति मण्डल कमीशन की रिपोर्ट को लागू किया गया। इसके साथ ही बाबरी मस्जिद का विध्वंश का समय भी था, जो की भारतीय राजनीति में मण्डल, मंदिर और मार्केट के रूप में व्याप्त है। भारत के विभिन्न राज्यों में एस्क व्यापक प्रभाव पड़ा खास तौर पर उत्तर भारत में इसका गहरा असर पड़ा। बिहार इस राजनीतिक परिघटना के केंद्र में था, जहां जनता दल उभरते हुए नए अन्य पिछड़ी जातियों में अपने समर्थन के आकार को मजबूत कर रही थी, जिसे की सामाजिक न्याय के रूप में भी देखा जाता है और इस सामाजिक न्याय की धारा में सत्ता में भागीदारी को लेकर जातिय समूहों में संघर्ष शुरू होने लगा था। इसकी शुरुआत सबसे पहले मध्य बिहार के पटना, नालंदा, आदि जिलों में आर्थिक और शैक्षणिक रूप से सम्पन्न कुर्मी, जाति के नेताओं ने यादवों के विरुद्ध किया तो वहीं लालू यादव मुस्लिम – यादव (माई) समीकरण के फार्मूले पर मजबूती से अड़े हुए थे।[iv]

जॉर्ज फर्नांडीश तथा नीतीश कुमार ने जनता दल से अलग होकर सन् 1994 में समता पार्टी का गठन किया गठन के पश्चात नीतीश कुमार को 1995 के बिहार विधान सभा चुनावों में समता पार्टी की नाजुक स्थिति से यह अहसास हो गया था, कि बिहार के अंदर लालू प्रसाद यादव को सत्ता से असहज करना है तो यह भाजपा से बैर रखकर नहीं किया जा सकता और फिर 1996 के बिहार विधान सभा चुनावों के लिए एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम के आधार पर भाजपा के साथ गठबंधन करने का निर्णय लिया। प्रारम्भिक युग में, जेडीयू ने एक ऐसे राजनीतिक परिदृश्य में काम किया, जिसमे सरल गठबंधन और बदलती वफादारी की विशेषता थी। जार्ज फर्नांडीश और नीतीश कुमार जैसी दिग्गज हस्तियों के नेतृत्व में पार्टी ने विभिन्न क्षेत्रीय और राष्ट्रीय दलों के साथ चुनाव पूर्व गठबंधन किया। ये गठबंधन अकसर प्रमुख राजनीतिक खिलारियों के प्रभूत्व का मुकाबला करने के उद्देश्य से बनाए गए थे। 1990 के दशक के अंत में संयुक्त मोर्चा सरकार में जेडीयू की भागीदारी

ने संघीय और समावेशी दृष्टिकोण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया। इस अवधि के दौरान गठबंधन की राजनीति के अनुभव ने पार्टी की भविष्य की गतिविधियों के लिए आधार तैयार किया।

एनडीए गठबंधन के दौरान

सह शताब्दी के मोड़ पर जडीयू के लिए एक आदर्श बदलाव देखा गया जैसा कि ऊपर उल्लेखित है की उसने राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन का एक प्रमुख घटक बनने के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ गठबंधन किया। यह गठबंधन एक महत्वपूर्ण प्रस्थान का प्रतीक है । यह गठबंधन पार्टी की पिछली साझेदारी से एक महत्वपूर्ण बदलाव था, क्योंकि इसने एक अलग हिंदुत्ववादी वैचारिक रूख वाली राष्ट्रीय पार्टी के साथ गठबंधन किया था। इस गठबंधन का नतीजा चुनावों में स्पष्ट तौर पर देखने को मिलता है। 1996 के आम चुनाव में समता पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के बीच गठबंधन हुआ जिसमें की कुल 81 सीटों पर समता पार्टी ने विभिन्न राज्यों में चुनाव लड़ा। बिहार उत्तर प्रदेश तथा उड़ीसा में मिलाकर पार्टी को 8 लोकसभा सीटों पर जनादेश प्राप्त हुआ इस समय केंद्र में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में अटल बिहारी वाजपेई की सरकार बनी तथा वाजपेई ने समता पार्टी की ओर से जॉर्ज फर्नांडिस को रक्षा मंत्री बनाया उसके पश्चात् सन् 1998 में हुए लोकसभा चुनाव में पार्टी ने 57 सीटों पर चुनाव लड़ा जहां 12 सीटों पर समता पार्टी को जनादेश प्राप्त हुआ सन 2000 में बिहार विधानसभा चुनाव में क्षमता पार्टी 120 सीटों में से 34 सीटें जीतने में कामयाब रही तो वहीं साथ में लड़ रही भाजपा 67 सीटों पर विजई रही यहां एक तथ्य यह भी है की लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व वाले गठबंधन को कुल 159 विधायकों का समर्थन प्राप्त होने के बावजूद राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन जो की 151 विधायकों का समर्थन का दावा पेश कर रहे थे उन्हें केंद्र में भाजपा की सरकार तथा राज्यपाल के सहयोग से सरकार बनाने को प्राथमिकता प्राप्त हुई जिसके तहत राज्यपाल ने नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिला दी परंतु या पहले से ही आभास लगाया जा रहा था की संख्या बल न होने के कारण यह सरकार ज्यादा दिनों तक नहीं चल पाएगी और हुआ भी ऐसा ही मुख्यमंत्री को अपने पद से 7 दिन के अंदर ही अपनी कुर्सी गंवानी पड़ी ।

सन् 2003 में शरद यादव के नेतृत्व में जनता दल के अंतर्गत जॉर्ज फर्नांडिस तथा नीतीश कुमार ने समता पार्टी का विलय कर दिया शरद यादव के जनता दल, लोक जनशक्ति पार्टी और समता पार्टी के विलय के उपरांत हीं 30 अक्टूबर 2003 को जडीयू (जनता दल यूनाइटेड) का गठन किया गया। यहां यह अपवाद के रूप में देखा जाता है कि ब्रह्मानंद मंडल के विरोध के कारण समता पार्टी का आधिकारिक रूप से विलय नहीं किया जा सका आगे आने वाले चुनाव में समता पार्टी का अस्तित्व शून्य होता चला गया।

सन् 2004 में जो की भाजपा के साथ गठबंधन कर लोकसभा चुनाव लड़ी जिसमें कि जदयू 24 तथा भाजपा 16 सीटों पर अपने उम्मीदवारों को खड़ा किया चुनाव परिणाम के बाद जडीयू को 6 तथा भाजपा को 5 सीटों पर विजई प्राप्त हुई इसके बाद फरवरी 2005 में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत न मिलने के कारण राष्ट्रपति शासन लगना पड़ा तथा पुनः अक्टूबर - नवंबर 2005 में चुनाव हुए तो जदयू ने भाजपा के साथ मिलकर सरकार बनाई जहां नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बनाए गए[v]। भाजपा तथा जदयू की यह जोड़ी 2009 के लोकसभा चुनाव एवं 2010 के बिहार विधानसभा चुनाव में भी एक साथ खड़ी रही जहां जेडीयू को 2009 में लोकसभा चुनाव के अंतर्गत 20 सीटें जीतने में कामयाबी मिली वहीं भाजपा 12 सीटों पर विजय रही और विधानसभा चुनाव में जडीयू को 115 सीटें मिली तथा जदयू ने बीजेपी के साथ मिलकर सरकार बनाई। 2014 के लोकसभा चुनाव से पूर्वी शरद यादव ने जो की जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी थे। उन्होंने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से अलग होने की घोषणा करते हुए कहा कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन अपने राष्ट्रीय झंडे से भटक गया है तत्पश्चात जदयू

का भाजपा के साथ चलना अब कठिन है। और इस प्रकार जनता दल यूनाइटेड का समता पार्टी के समय से चले आ रहे लगभग 17 सालों का गठबंधन विखंडित हो गया। गठबंधन टूटने के पश्चात दोनों के मध्य कुछ समय तक तल्खियाँ बढ़ती चली गयी गठबंधन टूटने के पश्चात सर्व प्रथम नीतीश कुमार ने भाजपा के कुल 11 मंत्रियों को उनके पद से हटा दिया तथा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के संयोजन के पद से शरद यादव ने भी इस्तीफा दे दिया। 2014 लोकसभा चुनाव में जेडीयू एनडीए से अलग होकर चुनाव लड़ा जहां चुनाव के पश्चात नीतीश कुमार को सिर्फ दो सीटें प्राप्त हुई इस समय भारतीय राजनीति में मोदी लहर का अत्यधिक बोलबाला था वहीं भाजपा लोक जनशक्ति पार्टी के गठबंधन के साथ 31 सीटों पर जीत का जश्न मना रही थी। यह समय नीतीश कुमार के लिए निराशा का दौर था और उन्होंने लोकसभा चुनाव में हार की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देकर एक दलित चेहरे के रूप में जीतन राम मांझी को बिहार का नया मुख्यमंत्री बनाया।

वर्ष 2015 में नीतीश कुमार की जदयू राष्ट्रीय जनता दल, कांग्रेस, जनता दल समाजवादी पार्टी, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, इंडिया नेशनल लोकदल और समाजवादी जनता पार्टी (राष्ट्रीय) ने गठबंधन बनाकर बिहार विधानसभा का चुनाव लड़ा इस चुनाव में जनता दल यूनाइटेड तथा राष्ट्रीय जनता दल 101–101 सीटों पर चुनाव लड़ी जिसमें की जदयू को 80 तथा राजद को 71 सीटों पर बहुमत प्राप्त हुआ यह विचित्र विडंबना थी, कि मोदी लहर के होते हुए भी बिहार में बीजेपी को कम सीटें आना एक चिंता का विषय था। क्योंकि हाल हीं में हुए लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी तथा राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन ने स्पष्ट बहुमत हासिल किया था तथा राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा व्याप्त था कि बिहार विधान सभा में इसका सकारात्मक स्वरूप दिखाई देगा परंतु ऐसा नहीं हुआ।

माहागठबंधन की सरकार को लगभग एक वर्ष हुआ ही था की जडीयू तथा राजद के बीच तकरार बनना शुरू हो गया तथा आय से अधिक संपत्ति के मामले में नीतीश कुमार महागठबंधन से अलग होकर सन् 2017 में एक बार फिर भाजपा के साथ सरकार बनाई।

नीतीश कुमार के नेतृत्व में जडीयू -भाजपा गठबंधन ने विकासात्मक पहल, शासन और सामाजिक न्याय पर ध्यान केंद्रित करते हुए बिहार में उल्लेखनीय सफलता हासिल की। दोनों दलों के सहयोगात्मक प्रयासों से एक स्थिर सरकार बनी और बिहार ने सापेक्ष राजनीतिक स्थिरता के दौर का अनुभव किया।

एनडीए – गठबंधन के बाद की गतिशीलता

हालांकि, जैसे-जैसे राजनीतिक गतिशीलता विकसित हुई , वैसे-वैसे एनडीए के भीतर समीकरण भी बदलते गए। सन् 2005 तथा 2010 का चुनाव एनडीए के साथ लड़ते हुए जेडयू न केवल विजय रही अपितु बिहार के अंदर इनके द्वरा किया गया विकास कार्य भी अपनी ख्याति प्राप्त कर रहा था यही कारण था की राजद एवम् अन्य पार्टियां 2005 से पूर्व एक लंबे समय तक सत्ता में रहने के उपरांत भी इन्हे हटा नहीं पा रहीं थी एनडीए की यह नूतन सरकार के मुखिया नीतीश कुमार ने सत्ता स्थापित करते हुए जो नूतन बिहार का नारा दिया था वह सिर्फ एक नारा बनकर ही नहीं रहा बल्कि बाद में वह तमाम आधारभूत संरचनाओं के विकास के रूप में देखा गया परंतु एनडीए गठबंधन का यह दौर 2014 में हुए लोक सभा चुनाओं के बाद बिखरी नजर आई वह भी तब जब एनडीए इस समय सम्पूर्ण भारत में मोदी लहर तथा काँग्रेस के ऊपर महंगाई, बेरोजगारी, भ्रस्टाचार आदि जैसे मुद्दों को भुनाने में कामयाब रहीं, वर्ष 2014 में एनडीए ने जिस प्रकार का प्रदर्शन किया उससे यह सिद्ध होता दिख रहा था, कि सन् 2015 के बिहार विधान सभा में भाजपा-जेडयू गठबंधन सत्ता पर जरूर काबिज हो जाती पर जेडयू विभिन्न मुद्दों जैसे कि अनुच्छेद 370, नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए), और राष्ट्रीय

नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) आदि जैसे मुद्दों पर मतभेदों ने जेडीयू और उसके सहयोगियों के बीच मतभेद में अहम भूमिका निभाई। और हुआ यह की कभी धुर विरोधी रहे लालू प्रसाद यादव नीत राजद तथा नीतीश कुमार की अगुवाई वाली जदयू ने एक साथ चुनाव लड़ने का फैसला किया जिसमे की काँग्रेस भी सम्मिलित थ। इनके इस गठबंधन को ग्रांड अलायंस तथा महागठबंधन भी कहा गया इस महागठबंधन ने बिहार विधान सभा 2015 के इस चुनाव में शानदार प्रदर्शन करते हुए एक प्रभावी जीत हासिल की जिसमे की कुल 243 विधान सभा सीटों में से 178 सीटों पर विजय पटाखा लहराया और मुख्यमंत्री के रूप में नीतीश कुमार ने सपथ लिया।

सन् 2020 बिहार विधान सभा चुनावों के बाद यह आम चर्चा थी की अब नीतीश कुमार का पतन का समय आ गया है। नीतीश कुमार ने 2020 के विधान सभा चुनावों से यह उम्मीद नहीं कि थी की एनडीए गठबंधन के साथ चुनाव लड़ते हुए इतनी कम सीटें आएंगी इस चुनाव में जहां बीजेपी को 78 सीटें मिली और वह बिहार में पहली बार दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी तो वहीं जेडीयू को सिर्फ 45 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा जबकि सन् 2015 के बिहार विधान सभा में जदयू को 71 सीटें प्राप्त हुई थी। यह पहली बार था जब नीतीश कुमार की जडीयू बिहार में तीसरे नंबर पर आई थी फिर भी एनडीए के साथ सरकार का गठन किया गया परंतु चुनावों परिणाम के बाद से ही जेडीयू एनडीए में असहज महसुष कर रही थी। बीजेपी को लेकर यह धारणा व्याप्त थी की बीजेपी पार्टियों को तोड़ने में माहिर है क्योंकि भारत के कई राज्यों में सत्ता परिवर्तन का दौर देखने को मिलता है जहां की भाजपा इसके प्रमुख केंद्र में रही है। जदयू को भी यह आभाष हो गया था की इसके पीछे बीजेपी का हाथ हो सकता है। आर सी पी सिंह का बीजेपी के प्रति झुकाव तथा पार्टी लाइन से हत कर काम करना साथ हीं अरुणाचल प्रदेश में जदयू के 7 में से 6 विधायकों का बीजेपी में शामिल होना भी जदयू की संकाओं को पुष्ट कर रही थी।

जेडीयू के लिए एनडीए के बाद का युग एक स्वतंत्र राजनीतिक प्रक्षेपक द्वारा चिह्नित किया गया है। पार्टी ने शासन, विकास और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करके अपनी जगह बनाने की कोशिश की है। नीतीश कुमार का नेतृत्व क्षेत्रीय आकांक्षाओं और राष्ट्रीय राजनीतिक संरेखण के बीच एक नाजुक संतुलन बनाएं रखने में महत्वपूर्ण रहा है।

निष्कर्ष

जनता दल (यूनाइटेड) की एनडीए गठबंधन से पहले के दौर से लेकर एनडीए के बाद की वर्तमान स्थिति तक की यात्रा भारतीय गठबंधन राजनीति में निहित जटिलताओं को दर्शाती है[vi]। हम ऊपर देख चुके है की कैसे 1990 के दशक में समता पार्टी जो की वर्तमान में जदयू राजनीतिक सफलता में विफल रहने के कारण एवम् अन्य को गठबंधन के माध्यम से पार्टी का विकास तथा अपने निर्वाचन क्षेत्र की गतिशील जरूरतों को पूरा करने के लिए इसकी अनुकूलन क्षमता और प्रतिबद्धता को उजागर करता है। जैसे-जैसे राजनीतिक परिदृश्य विकसित एवम् परिवर्तित हो रहा है, जदयू 2005 से निरंतर बिहार में सत्ता के केंद्र में बनी हुई है वह भी तब जब बिहार में कभी भी जदयू को पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं हुआ है यहाँ तक की 2020 बिहार विधान सभा चुनावों में पार्टी तीसरे नंबर पर आने के बावजूद नीतीश कुमार मुख्यमंत्री के रूप में सपथ लेते हैं। तमाम उठा पटक के परिणाम स्वरूप जदयू बिहार की राजनीतिक नियति को आकार देने और भारत में गठबंधन राजनीति के बड़े आख्यान में योगदान देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका बनाई हुई है।

[i] श्रीवास्तव, अंकु. (2022). *सेंसेक्स क्षेत्रीय दलों का – भारतीय राजनीति की दिशा बदलनेवाली रीजनल पार्टियों का लेखा - जोखा.* प्रभात पेपरबैक्स. नई दिल्ली.

[ii] वही पे. 25

[iii] कुमार. संजय. (2019), *बिहार की चुनावी राजनीति- जाति वर्ग का समीकरण (1990-2015)*. फॉरवर्ड प्रेस. नई दिल्ली

[iv] श्रीवास्तव. अंकु. (2022*), सेंसेक्स क्षेत्रीय दलों का – भारतीय राजनीति की दिशा बदलनेवाली रीजनल पार्टियों का लेखा -जोखा.* प्रभात पेपरबैक्स. नई दिल्ली. पे. 117

[v] चौबे. कमल नयन. (2008). *जातियों का राजनीतिकरण-बिहार में पिछड़ी जातियों के उभार की दास्तान*. वाणी प्रकाशन. नई दिल्ली.

[vi] https://www.bhaskar.com/epaper/detail-page/patna/384/2020-10-05?pid=10